'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 13 | 19 सितम्बर, 2018 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'क्षत्रियों की कमजोरी राष्ट्र को महंगी पड़ी'

मध्यकाल जैसी वीरता द्वापर व त्रेता में भी नहीं मिलती। सिर कटने के बाद धड़ लड़ने के उदाहरण मध्यकाल में ही मिलते हैं लेकिन फिर भी हम हारे इसका कारण हमारी कोई न कोई कमजोरी या गिरावट रही। हम प्रायः इसके लिए आक्रमणकारियों को दोष देते हैं लेकिन कोई किसी को बूरी नजर से तब देखता है जब कोई कमजोरी होती है। इसका अर्थ हमारे में कोई कमजोरी थी और हमारी वह कमजोरी हमें ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र को महंगी पड़ी। हमें ठहर कर, विचार कर उस कमजोरी पर चोट करनी चाहिए। केवल दुनियां की देखादेखी उसकी दौड़ में शामिल होना श्रेष्ठता नहीं है बल्कि आत्मचिंतन द्वारा अपनी कमजोरी और गिरावट को दूर करने को उद्यत होना श्रेष्ठता है। सौराष्ट्र के पानीपत के नाम से प्रसिद्ध भूचर मोरी स्थान पर 2 सितम्बर को भूचर मोरी शहीद स्मारक ट्रस्ट एवं अखिल गुजरात राजपूत युवा संघ द्वारा आयोजित 27वें भूचर मोरी शहीद श्रद्धांजलि समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि गुजरात से एक भी राजपूत सांसद चुन कर नहीं आया, टिकटें भी नहीं दी गई। क्या यह पीड़ादायक नहीं है कि गुजरात के एक भी राजपूत को सांसद बनने के योग्य नहीं समझा गया? ऐसे में चिंतन करें कि कहीं कमी मेरी तो नहीं है। संगठन कभी लक्ष्य नहीं होता बल्कि हमारे जन्म के हेतु को हासिल करने का साधन मात्र है। समाज में फैली हीन भावना बहुत बड़ा रोग है इसलिए समाज में काम करने वाले को सावधानी रखनी चाहिए। साथ चलने वाले भी विरोध कर सकते हैं उस समय हमारी मनः स्थिति यह होनी चाहिए कि गुलाब पाना है तो कांटे तो सहने ही पड़ेंगे। रजपूती का काम करने में कष्ट अवश्य आएंगे, हमारे पूर्वजों को भी आए थे। उनके तो अगले क्षण का भी पता नहीं रहता था।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सौराष्ट्र का पानीपत 'भूचर मोरी'

भूचर मोरी को सौराष्ट्र का पानीपत या गुजरात का हल्दीघाटी के नाम से जाना जाता है। अकबर का मित्र अजीज कोकाह अहमदाबाद पर कब्जा करना चाहता था। उसने अहमदबाद के सुबेदार को मारने के लिए अकबर की सहायता से हमला किया। अहमदाबाद के सुबेदार ने नवानगर के शासक जाम छत्रसाल (जाम सताजी) की शरण ली। इसी शरणागत की रक्षा के लिए इस स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ। जाम सताजी के अनेक मित्र राजाओं ने सहयोग दिया लेकिन निर्णायक घड़ी में जूनागढ के बाबी एवं लोमो खुमाण के दुश्मन के साथ मिलने से अजीज कोकाह का पलड़ा भारी पड़ने लगा। (शेष पृष्ठ 7 पर)

गजेन्द्रसिंह महरोली बने प्रदेश संयजोक

भारतीय जनता पार्टी द्वारा घोषित राजस्थान विधानसभा चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक के रूप से जोधपुर सांसद एवं केन्द्रीय कृषि कल्याण राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह महरोली को नियुक्त किया गया है। यह समिति विधानसभा टिकटों के पैनल बनाने से लेकर सभी प्रकार के चुनाव प्रबंधन का दायित्व निर्वहन करेगी। 16 सदस्यीय समिति के अध्यक्ष प्रदेशाध्यक्ष को बनाया गया है एवं मुख्यमंत्री इसकी सदस्या हैं।

'बनना है तो राजपूत बनें'

अपने आपसे प्रश्न पूछें कि क्या हम राजपूत हैं? क्या हम राजपूत बनना चाहते हैं? राजपूत बनने का अर्थ है छोड़ना, त्याग करना और क्या हम छोड़ने के लिए तैयार हैं? हम सब अपने नाम के आगे ठाकुर लगाते हैं जरा विचार करें कि क्या हम ठाकुर रह गए हैं? ठाकुर का मतलब ईश्वर की तरह सम्पूर्ण प्रजा के प्रति ईश्वरीय भाव होना होता है, क्या हमारे में ईश्वर की तरह भाव है? जो अपने आपको बचाता है वह मिट जाता है और जो मिटने को तैयार होता है वह क्षत्रिय बन जाता है। राजपूत बन जाता है। विचार करें क्या हमारे प्रयत्न राजपूत बनने के हैं? राजपूत के अतिरिक्त हम कुछ भी बनना चाहते हैं तो गुलाम बन जाएंगे। नारों से या जुगत बिठाकर कुछ बन जाना राजपूत का काम नहीं है। राष्ट्र की बात करने वाले लोग राष्ट्र के नहीं पार्टी के भक्त हैं या अपने नेता के भक्त हैं या फिर अपनी स्वयं की कामनाओं के भक्त हैं, ऐसे लोगों से मांग कर हम क्या बनना चाहते हैं? ऐसे लोगों से मांगना क्षत्रिय का काम नहीं है और इनसे मांग कर हम कुछ बन भी गए तो गुलाम बनेंगे अतः बनना है तो राजपूत बनें, क्षत्रिय बनें।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पूर्व महारानी पहुंची संघशक्ति

विगत दिनों जैसलमेर की पूर्व महारानी रसेश्वरी राज्य लक्ष्मी देवी ने जैसलमेर से विधानसभा चुनाव लड़ने की घोषणा की। अपने चुनाव लड़ने की इन चर्चाओं के बीच 13 सितम्बर को संघशक्ति पहुंची एवं माननीय संघप्रमुख श्री से चर्चा कर आशीर्वाद लिया। उन्होंने बताया कि एक राष्ट्रीय पार्टी से उनको टिकट दिए जाने की संभावना है और इसके लिए उस पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं से वे निरन्तर सम्पर्क में हैं।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

महापुरुष कभी तोड़ने की बात नहीं करते बल्कि उन बिन्दुओं को खोजने का प्रयास करते हैं जो आपस में जोड़ सकें। वे उन्हीं बिन्दुओं को उद्घाटित करते हैं, प्रचारित करते हैं और अपने आचरण द्वारा उदाहरण पेश कर साथियों के लिए प्रेरणा बनते हैं। जातीय संघर्ष इसी प्रकार तोड़ने वाला कार्य है। आजादी के आंदोलन के अंतिम चरण से ही इस देश में वोटों के ध्रुवीकरण के नाम पर जातीय संघर्ष की नींव लग चुकी थी। गांवों में सदा से साथ रहने वाले जाति समाजों के बीच वोट की राजनीति ने खाई पैदा करना प्रारम्भ कर दिया था। देश का बुद्धिवादी वर्ग अपने स्वर्थों की पूर्ति बाबत इस प्रकार के भेद को प्रोत्साहित कर रहा था लेकिन उसी समय अनेक समझदार लोग इस दुराव को बढ़ाने की अपेक्षा उन बिन्दुओं को प्रतिष्ठापित करने का प्रयास कर रहे थे जो जोड़क तत्व के रूप में मौजूद थे। राजस्थान में राजपूतों और जाटों के बीच इस प्रकार की खाई का प्रारम्भ आजादी के आंदोलन से ही प्रारम्भ हो चुका था। सत्ता में आने को लालायित बुद्धिवादी वर्ग इस खाई को बढ़ाकर राजपूतों को अलग-थलग करने को प्रयासरत था और वह कुछ हद तक सफल भी हो रहा था। लेकिन पूज्य तनसिंह जी का मानना था कि जाट और राजपूत दोनों खेतिहार कौम हैं। वर्षों से गांवों में साथ-साथ रहती आई हैं। एक इस खेत में बैठकर कांदा रोटी खाता था तो एक उस खेत में। दोनों की समस्याएं समान हैं और परिस्थिति समान हैं तो ऐसे में संघर्ष क्यों? लेकिन बुद्धिवादी ताकतें अपनी योजना में सफल हो रही थीं और यह खाई बनी रहे एवं बढ़ती रहे इसके लिए प्रयासरत थीं। लेकिन महापुरुष सफलता-असफलता की चिंता नहीं करते बल्कि अपना दायित्व पूरी ईमानदारी से निभाकर नजीर स्थापित करते हैं। वे हर अवसर का उपयोग अपनी सोच को धरातल पर लाने के लिए करते हैं। ऐसा ही अवसर पूज्य श्री के जीवन में छठीं लोकसभा के सदस्य रहते आया जब मोरारजी देसाई की सरकार गिर गई। मोरारजी देसाई के इस्तीफे के बाद तत्कालीन गृहमंत्री चौधरी चरणसिंह ने कांग्रेस के समर्थन से सरकार बनाने का दावा पेश किया। आपातकाल के बाद विभिन्न विचारधाराओं के संयुक्त विपक्ष से गठित जनता पार्टी बिखर गई। जिन्होंने एक साथ मिलकर चुनाव लड़ा था वे ही एक-दूसरे के विरोधी हो गए। ऐसे में जनता पार्टी के बैनर तले चुनाव लड़े सांसदों का समर्थन मांगने के लिए चौधरी चरणसिंह के लोगों ने सम्पर्क करना प्रारम्भ किया। चौधरी चरणसिंह भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के मौलिक चिंतक थे एवं उनका जीवन बहुत सादा था। पूज्य श्री को उनकी मौलिकता एवं सादगी पसंद थी। साथ ही आजाद भारत के इतिहास में पहली बार बुद्धिवादी शहरी वर्ग की अपेक्षा मौलिक ग्रामीण चिंतन वाला व्यक्ति प्रधानमंत्री बनने जा रहा था। साथ ही जाट राजपूत के नाम पर पैदा की गई खाई को पाटने की पहल करने का भी यह अवसर था। पूज्य श्री उस लोकसभा में राजस्थान से चुने गए एक मात्र राजपूत सांसद थे। राजस्थान से ही सांसद कुंभाराम आर्य एवं दौलतराम सारण चरणसिंह जी के प्रतिनिधि बनकर पूज्य श्री से मिलने जोधपुर आए एवं चरणसिंह के लिए समर्थन मांगा। पूज्य श्री ने सहर्ष अपना समर्थन देने का वादा किया एवं अपनी जोड़ने वाली सोच प्रकट की। यह था उनका महापुरुष का क्रियात्मक शिक्षण। हालांकि कालांतर में कांग्रेस द्वारा समर्थन वापसी के कारण वह सरकार भी गिर गई लेकिन पूज्य श्री ने एक नजीर पेश की कि समान परिस्थिति वाली कौमों को अपने बीच पनपी नकारात्मकता को प्रचारित करने की अपेक्षा उन समानताओं को खोजना चाहिए जो निकट ला सके। साथ ही अवसर मिलने पर इन समानताओं को प्रचारित करना चाहिए, उनको व्यवहार में लाने का उद्यम करना चाहिए। उनकी यह सोच दोनों समाजों में कितनी प्रसारित हो पाई या समाजों ने इसका कितना अनुसरण किया यह अलग विषय है परन्तु महापुरुष इस बात की चिंता भी नहीं किया करते कि वे कितने सफल या असफल हुए। वे तो अपना दायित्व निर्वहन करते हैं और उनका यह दायित्व निर्वहन जागरुक लोगों के लिए प्रेरणा बन जाया करता है। आएं परमेश्वर से विनती करें कि हमारे में भी यह जागरुकता अवतरित होवे।

जीवनोपयोगी जानकारी-12

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(2) पैरामेडिकल (Paramedical) : यह चिकित्सा क्षेत्र की सहायक शाखा है। जीव-विज्ञान वर्ग के छात्रों के लिए 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् कॅरियर निर्माण के अनेक विकल्प इस शाखा के अन्तर्गत उपलब्ध हैं। भारत में मुख्यतः तीन प्रकार के पैरामेडिकल कोर्स उपलब्ध हैं। स्नातक डिग्री कोर्स, डिप्लोमा कोर्स तथा सर्टिफिकेट कोर्स। इन तीनों प्रकार के कोर्स के अन्तर्गत उपलब्ध विकल्पों की सूची यहां प्रस्तुत है :

स्नातक डिग्री कोर्स

(i) बैचलर ऑफ फिजियोथैरेपी
(ii) बैचलर ऑफ आक्युपेशनल थेरेपी
(iii) बी.एस.सी. (ऑपरेशन थियेटर टेक्नोलॉजी) (OTI)
(iv) बी.एस.सी. (डायलिसिस टेक्नोलॉजी)
(v) बी.एस.सी. (मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी)
(vi) बी.एस.सी. (एक्स-रे टेक्नोलॉजी)
(vii) बी.एस.सी. (रेडियोग्राफी)
(viii) बी.एस.सी. (मेडिकल इमेजिंग टेक्नोलॉजी)
(ix) बी.एस.सी. (मेडिकल रिकॉर्ड टेक्नोलॉजी)
(x) बी.एस.सी. (ऑथैल्निक टेक्नोलॉजी)
(xi) बी.एस.सी. (ऑडियोलॉजी एण्ड स्पीच थैरेपी)
(xii) बी.एस.सी. (ऑप्टोमेट्री)
(xiii) बी.एस.सी. (एनेस्थिसिया टेक्नोलॉजी)।

उपरोक्त सभी कोर्सेज की अवधि 3 अथवा 4 वर्ष है तथा इनमें प्रवेश हेतु जीव विज्ञान विषय से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक है।

डिप्लोमा कोर्स

(i) डिप्लोमा इन फिजियोथैरेपी।
(ii) डिप्लोमा इन ऑक्युपेशनल थैरेपी।
(iii) डिप्लोमा इन ऑपरेशन थियेटर टेक्नोलॉजी।
(iv) डिप्लोमा इन डायलिसिस टेक्नोलॉजी।
(v) डिप्लोमा इन मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी।
(vi) डिप्लोमा इन एक्स-रे टेक्नोलॉजी।
(vii) डिप्लोमा इन रेडियोग्राफी।
(viii) डिप्लोमा इन मेडिकल इमेजिंग टेक्नोलॉजी।
(ix) डिप्लोमा इन मेडिकल रिकॉर्ड टेक्नोलॉजी।
(x) डिप्लोमा इन नर्सिंग केयर असिस्टेंट।
(xi) डिप्लोमा इन ऑथैल्मिक टेक्नोलॉजी।
(xii) डिप्लोमा इन हियरिंग लैंग्वेज एण्ड स्पीच।
(xiii) डिप्लोमा इन एनेस्थिसिया टेक्नोलॉजी।
(xiv) डिप्लोमा इन डेन्टल हाईजिनिस्ट (Dental Hygienist)
(xv) डिप्लोमा इन रूरल हेल्थ केयर।
(xvi) डिप्लोमा इन कम्युनिटि हेल्थ केयर।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

सूरमा सामन्त

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम में जब सब रजवाड़े व ठिकानेदार अंग्रेजों के साथ थे तब मारवाड़ के गुलर ठाकुर बिशनसिंह, आलनीयावास के ठाकुर अजीतसिंह राठौड़, आसोप के ठाकुर शिवनाथ सिंह कुम्पावत ने आऊआ के ठाकुर कुशालसिंह चाम्पावत का उस क्रांति में भरपूर साथ दिया। उन्हें साथ देने मेवाड़ के कोठारिया के जागीरदार ठाकुर जोधसिंह चौहान भी अपने दल के साथ आऊआ आए और रियासत के विरोध के बावजूद अंग्रेजों से भरसक टक्कर ली। बाद के समय में मारवाड़ के राव चन्द्रसेन के वंशजों के ठिकाने खरवा (अजमेर मेरवाड़ा) के इस्तमदार राव गोपालसिंह राठौड़ ने अंग्रेजों से स्वतंत्रता की अलख को जगाए रखने का बीड़ा उठाए रखा।

राव गोपालसिंह खरवा स्वतंत्रता प्रेमी देश भक्त, समाज सुधारक, महान क्रांतिकारी, कवि हृदय, अति गुणवान, ईष्ट के पुजारी क्षत्रिय थे। वे अंग्रेजी शासन के प्रबल विरोधी रहे तथा उनका समर्थन करने वाले राजा रईस एवं नवाबों के कटु आलोचक रहे। मारवाड़ के भूप तथा ईडर (गुजरात) के राजा सरप्रताप की राजाओं एवं अंग्रेजों में बड़ी धाक थी। सरप्रताप अंग्रेजों के बड़े हिमायती थे तथा उनसे बड़े-बड़े काम निकलवा लेते थे। उनकी अंग्रेजों से दोस्ती की खिलाफत करना खरवा राव की हिम्मत एवं स्वाभिमान का परिचायक थी। सरप्रताप की अंग्रेज उपलब्धियों पर उन्होंने ये लिखा- 'जे तै तैरे तकमे (मेडल) हैं ते तै सब पाप के पयोद (बादल) हैं।'

राव खरवा उस समय राजपूताना में स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध चल रही सशस्त्र क्रांति के अग्रदूत रहे। वे स्वतंत्रता के लिए बलशाली ब्रिटिश सरकार से भिड़ते रहे। उन्हें अंग्रेजों ने अनेक कष्ट दिए। अपनी जागीर खरवा को त्यागना पड़ा। 1903 में भारत के वायसराय लार्ड कर्जन ने दिल्ली में हिन्दू राजाओं के दरबार का आयोजन किया। सम्मेलन में मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह भी जाने को निमंत्रित थे। राव गोपालसिंह सहित उस समय के स्वंत्रता प्रेमी क्रांतिकारियों का हिन्दुआ कुलभूषण सूर्यवंशी मेवाड़ धणी को दिल्ली जाना कांटे की तरह चुभने लगा। खरवा राव ने मलसीसर ठाकुर भूरसिंह शेखावत एवं जोबनेर ठाकुर करणसिंह खंगारोत के साथ मिलकर महाराणा को दिल्ली जाने से रोकने की जिम्मेदारी केशरीसिंह बारहठ को दी। बारहठ के रचित सौरठे 'चेतावनी रा चुंगटिया' पढ़ कर महाराणा ने दिल्ली दरबार में जाने का मानस बदल दिया। खरवा राव ने महाराणा के इस स्वामीमानी साहस पर उनकी प्रशंसा में यह दोहा कहा -

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'एक से चार सितम्बर के बीच चौदह शिविर'

सूरत

बेलवा

प्रतिवर्ष मई माह में उच्च प्रशिक्षण शिविर के आयोजन के पश्चात् जून माह से प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला प्रारम्भ होती है। इस वर्ष उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान संचालन प्रमुख ने प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की संख्या बढ़ाने की बात कही थी, क्योंकि शाखा के बाद प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर बालकों को स्वयंसेवक बनने के पथ पर अग्रसर करने वाला प्रथम सोपान है। इसी के अनुरूप जून माह से इन शिविरों की श्रृंखला निरन्तर चल रही है। इसी क्रम में 1 से 4 सितम्बर की अवधि में दो बालिका शिविर सहित कुल चौदह शिविर संपन्न हुए जिनमें लगभग 2000 बालक-बालिकाओं ने संघ का प्राथमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुजरात में सूरत के आस्तिक स्कूल गोडादरा में 1 से 3 सितम्बर तक बालिका शिविर का आयोजन हुआ। शिविर संचालिका श्रीमती जागृति बा हरदासकाबास ने बालिकाओं को शिविर के अन्तिम दिन कुमकुम तिलक लगाकर विदाई देते हुए कहा कि आपके हृदय में संघ ने सद्-संस्कारों की जो ज्योत प्रज्वलित की है, उससे आपका सम्पूर्ण जीवन आलोकित हो उठे। हमारे भीतर दूषण व भूषण दोनों मौजूद हैं, जहां भी ये दूषण आपके जीवन में बाधक बनेंगे, संघ के संस्कार आपकी उनसे रक्षा करेंगे। विदाई कार्यक्रम में शिविरार्थी बालिकाओं के अलावा बड़ी संख्या में समाजबंधु भी सम्मिलित हुए। शिविर में सूरत व मुम्बई में निवासरत राजस्थान, गुजरात व उत्तरप्रदेश राज्यों की लगभग 160 बालिकाएं सम्मिलित हुई। भंवरसिंह निम्बोला, उत्तमसिंह सामल, जोधसिंह सामल, भंवरसिंह आकोली, अर्जुनसिंह मारोल, अर्जुनसिंह असाडा, महेन्द्रसिंह मवडी, कालूसिंह पादरू, राजूसिंह कोविया, विक्रमसिंह खाण्डी, राजूसिंह बांटा, गणपतसिंह मादड़ी आदि ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया। विदाई के समय आयोजित स्नेहमिलन में वरिष्ठ स्वयंसेवक रामसिंह माडपुरा व प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा भी उपस्थित रहे। जोधपुर संभाग के अन्तर्गत शेरगढ़ प्रांत के बेलवा गांव में भी बालिका वर्ग का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 1 से 4 सितम्बर तक आयोजित हुआ। गांव के मंगल बाल विद्यालय के प्रांगण में आयोजित शिविर का संचालन श्रीमती उषा कंवर पाटोदा ने किया, जिसमें बापिणी, ओसियां, सेखाला, बेलवा, गोपालसर, बस्तवा, जिनजिनियाला, गडा, निम्बा का गांव, सिमरखिया, बालेसर, चामू आदि गांवों की लगभग 150 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर के दौरान बालिकाओं ने गाजण माता मंदिर का भ्रमण भी किया। प्रतिहार वंश की कुलदेवी गाजण माता का यह मंदिर बेलवा गांव से 4 किमी दूर इंदावटी क्षेत्र की सबसे ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। इसके अतिरिक्त बालिकाओं ने बिंजा बाबा के स्थान का भी भ्रमण किया जहां पूज्य श्री तनसिंह जी के सान्निध्य में पहले शिविर हो चुका है।

पाली जिले के मारवाड़ जंक्शन में संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के संचालन में शिविर संपन्न हुआ। 1 से 4 सितम्बर तक सरस्वती विद्यालय के प्रांगण में संपन्न इस शिविर में बासनी, भाणका, जोजावर, मारवाड़ जंक्शन, बिठौड़ा कलां, गुडा रामसिंह, चावण्डिया, राजकिया, नवातला, सोजत आदि गांवों के 120 राजपूत बालक सम्मिलित हुए। शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए रणधा ने कहा कि जिस प्रकार अग्नि में तपकर स्वर्ण कुन्दन में बदल जाता है, उसी प्रकार संघ आपको इस शिविर रूपी यज्ञ में तपाकर आपके स्वाभाविक गुणों को निखार दे रहा है, जिससे आपकी रजशक्ति सत के साथ मिलकर जाति, समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा में लग सके। इसी अवधि में ओसियां प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर भेड़ के भोमनगर में संपन्न हुआ। भरतपालसिंह दासपां के संचालन में भेड़, भाखरी, पीलवा, बेदू, बापिणी, ओसियां, बालेसर, सेखाला आदि गांवों के लगभग 170 राजपूत युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। मोडसिंह भेड़ व जालमसिंह भेड़ ने ग्रामवासियों के सहयोग से शिविर की व्यवस्था संभाली। जालोर संभाग के सायला प्रांत के जसवंतपुरा मंडल के अन्तर्गत पूरण गांव में भी एक शिविर इसी अवधि में संपन्न हुआ। गांव के भूतेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में आयोजित इस शिविर का संचालन अमरसिंह चांदना ने किया। संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी भी शिविर में उपस्थित रहे। शिविर में पूरण, चेकला, तेजावास, केसुआ, सरण का खेड़ा, जाखड़ी, रतनपुरा आदि गांवों के अलावा भीनमाल राजपूत छात्रावास के बालकों ने भी भाग लिया। अन्तिम दिन शिविर स्थल पर स्नेहमिलन भी रखा गया, जिसमें बड़ी संख्या में क्षेत्र के समाजबंधु सम्मिलित हुए, जिन्हें अर्जुनसिंह देलदरी ने संघ की कार्य प्रणाली की जानकारी दी। स्नेहमिलन में मंदिर के महंत गणेशगिरि का सानिध्य भी प्राप्त हुआ तथा उन्होंने संस्कार निर्माण के इस कार्य की सराहना की।

1 से 4 सितम्बर की अवधि में ही पोकरण संभाग के पोकरण प्रांत के अन्तर्गत आने वाले झलोड़ा भाटियान गांव में शिविर संपन्न हुआ जिसमें झलोड़ा, दांतल, फलसूण्ड, पारासर, बलाड़, केसुम्बला, राजमथाई, झिनझिनियाली, तेजमालता आदि गांवों तथा कृष्ण छात्रावास (बाड़मेर) से 362 शिविरार्थी उपस्थित रहे। शिविर संचालक हाकमसिंह देवड़ा ने शिविरार्थियों को जागृत रहकर यहां सिखाई गई हर बात को गंभीरतापूर्वक ग्रहण करने की बात कही। शिविर के दौरान ही कृष्ण जन्माष्टमी भी मनाई गई। गांव के समस्त समाज बंधुओं ने मिलकर शिविर की व्यवस्था संभाली। पोकरण संभाग के ही फलौदी प्रांत में धौलिया गांव में भी इसी अवधि में शिविर का आयोजन हुआ। नरपतसिंह राजगढ़ के संचालन में संपन्न शिविर में धौलिया, खेतुसर, अवाय, जोरसिंह की ढाणी, आसकन्द्रा, दिधू, सिहडा, टेपू, टेकरा आदि गांवों के 150 से अधिक बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 3 सितम्बर को कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष में खींवसिंह तथा बारू ग्रामवासियों ने शिविरार्थियों हेतु प्रसादी का कार्यक्रम रखा। गिरधारी सिंह धौलिया ने व्यवस्था की जिम्मेदारी संभाली। विदाई कार्यक्रम में स्थानीय ग्रामीण डॉ. मोहनसिंह ने भी शिविरार्थियों को संबोधित किया तथा संघ कार्य को ईश्वरीय कार्य बताया।

जैसलमेर संभाग के रामगढ़-मोहनगढ़ प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर भी इसी अवधि में सुल्ताना गांव में संपन्न हुआ, जिसका संचालन प्रांत प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि कोई भी शिक्षण तभी सार्थक होता है जब उसे जीवन में उतारा जाए। अतः जो भी यहां पाया है उसे आचरण में ढाल लें। शिविर में जोगा, सोनू, सलखा, पारेवर, बेरसियाला, रामगढ़, तेजमालता, म्याजलार, सुल्ताना, नेहडाई, कनोई, लोद्रवा, राधवा, सेरावा, अर्जुना, डिग्गा आदि गांवों से 270 से अधिक राजपूत बालक सम्मिलित हुए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संपादकीय

नकल से निकली निरपेक्षता

आजादी के बाद पनपी व्यवस्था में निरपेक्षता शब्द पर बहुत अधिक बल दिया गया। धर्म निरपेक्षता, पंथ निरपेक्षता, जाति निरपेक्षता आदि शब्दों का बहुतायत में प्रचलन है एवं सभी राजनीतिक लोग इस ओर बढ़ने की बातें करते हैं। सिद्धांततः यदि इस निरपेक्षता को देखें तो भला विचार मालूम होता है कि शासन को सदैव निरपेक्ष रहना चाहिए। उसे किसी पूजा पद्धति, पंथ, जाति के प्रति पक्षपाती नहीं होना चाहिए। सही भी है क्योंकि शासक किसी एक का एवं किसी एक के लिए नहीं होता बल्कि सबका एवं सबके लिए होता है। इसीलिए तो शासक के लिए ईश्वरीय भाव को आवश्यक माना गया है कि जिस प्रकार ईश्वर अपनी सम्पूर्ण प्रजा के प्रति समभाव रखते हुए लालन-पालन करता है वैसा ही भाव शासक का होना चाहिए। भारत में लाखों वर्षों की जीवन श्रृंखला के श्रेष्ठ की ओर गतिमान स्वरूप के कारण उपजी व्यवस्था में शासक से इसी ईश्वरीय भाव की अपेक्षा की जाती थी और इसीलिए क्षत्रिय के स्वाभाविक गुणों में एक और अंतिम ईश्वरीय भाव को माना गया। भारतीय क्षत्रिय शासकों में यह भाव स्वाभाविक रूप से था इसीलिए विभिन्न प्रकार के आक्रमणों एवं षड्यंत्रों के बावजूद प्रजा के जेहन में बैठे क्षत्रियत्व के प्रति सम्मान को सम्पूर्ण रूप से मिटाया नहीं जा सका है। जनता के सामने आज भी उपयुक्त विकल्प होने पर क्षत्रियत्व को आंशिक रूप से अपनाने वाले राजनीतिज्ञ अपराजेयी हैं। इसीलिए भारत ने निरपेक्षता जैसे निषेधात्मक पक्ष को नहीं सोचा बल्कि सबके सम्मान के, सबके सापेक्ष रहने के विधायी पक्ष को सोचा और लंबे अभ्यास के परिणाम स्वरूप सबके प्रति ईश्वरीय भाव को आत्मसात किया। इसी का परिणाम था कि भारत के राजाओं की छत्रछाया में विभिन्न मतावलंबी अपने-अपने मत के अनुसार श्रेष्ठता की ओर अग्रसर हो पाए और भारत में सभ्यता एवं संस्कृति फली फूली। लेकिन दुर्भाग्य से आजादी के बाद देश में लागू हुई व्यवस्था के संवाहक रंगरूप से ही भारतीय थे इसलिए उन्होंने अपना आदर्श भारत में नहीं खोजा। उनकी नजर में भारत में लाखों वर्षों के शोधन, परिशोधन एवं संवर्द्धन के परिणाम स्वरूप पनपी व्यवस्था तो दकियानूसी थी। इसीलिए उन्होंने उस व्यवस्था की ओर नजरें दौड़ाई जहां ईश्वरीय भाव शब्द ही ईजाद नहीं हुआ था। उनका ईश्वर अन्य पंथों के लोगों के ईश्वर से अलग था और अपने ईश्वर की संतुष्टि के लिए उस दूसरे ईश्वर को मानने वाले लोगों को अपने ईश्वर के अधीन लाना या समाप्त करना ही उनके लिए एकमात्र उपाय था। इसीलिए संपूर्ण पश्चिम इस प्रकार के भयंकर रक्तपातों के इतिहास से भरा पड़ा है जो उपासना पद्धति के नाम पर किए गए। ऐसे सभी रक्तपात राज्य की शक्ति के बल पर किए गए इसलिए वहां के समझदार लोगों ने तय किया कि राज्य की कोई उपासना पद्धति नहीं होगी, राज्य किसी भी पूजा पद्धति को प्रश्रय नहीं देगा या राज्य की कोई जाति नहीं होगी।

इस प्रकार पश्चिम में पनपी निरपेक्षता निषेधात्मक अवधारणा से पनपी थी और आज तक नकारात्मक ही बनी हुई है। पश्चिम का इतिहास पूजा पद्धतियों के कारण हुए युद्धों से भरा पड़ा है लेकिन भारतीय परम्परा में ऐसा एक भी उदाहरण ढूंढ़ना मुश्किल है। यहां तो प्रताप का सेनापति हाकिम खां सूर होता है और हम्मीर मूसलमान सैनिकों के लिए मर मिटते हैं। यहां का अशोक युद्धों से उपराम होकर धर्म का प्रचार करता है पर केवल दण्ड शक्ति के बल पर नहीं। भारत की व्यवस्था व्यक्ति के अस्तित्व को पूर्ण रूप से ईश्वर के अंश के रूप में स्वीकार करती थी और इसीलिए उसकी नजर हर व्यक्ति में बैठे परमेश्वर पर रहती थी। इसलिए यहां पंथ निरपेक्षता जैसा कोई शब्द प्रचलन में ही न था। लेकिन भारत में आजादी के बाद पनपी व्यवस्था का स्रोत यह सुदीर्घ भारतीय परम्परा न होकर पश्चिम में रक्तपातों में से निकली समझौतावादी एवं निरोधात्मक व्यवस्था बनी इसीलिए भारत में पंथ निरेपक्षता नामक शब्द प्रचलन में आया। इसीलिए भारत के तात्कालिक भाग्य विधाताओं ने यह तय किया कि भारत का शासन किसी पंथ, जाति आदि से संबंध नहीं रखेगा जबकि होना यह चाहिए था कि भारत का शासन सभी पंथों, जातियों के विकास के लिए समान रूप से सम्मानपूर्वक प्रयास करेगा। आप कहेंगे कि इससे क्या फर्क पड़ गया बात तो एक ही है लेकिन वास्तव में बात एक नहीं है। पहले वाली बात निषेधात्मक है, नकारात्मक है वहीं दूसरी बात विधायी है, सकारात्मक है। भारतीय संविधान एवं राजसत्ता की इस निषेधात्मक सोच का ही परिणाम हुआ कि तुष्टिकरण जैसी व्यवस्था अमल में आई। पिछड़े एवं अल्पसंख्यकों के नाम पर भरपूर तुष्टिकरण किया गया और परिणाम स्वरूप सरकारी प्रयासों से एक असंतुलन पैदा हो गया जिसका परिणाम आज सम्पूर्ण राष्ट्र भोग रहा है। एक समय तो सरकार द्वारा यह कहा जाने लगा कि देश के संसधानों पर प्रथम हक मूसलमानों का है और आज की सरकारें यह कह रही है कि देश के संसाधनों पर प्रथम हक तथाकथित दलितों का है। सरकारें पहले तो बड़े-बड़े उद्योगपतियों से मिलकर आदिवासियों से मूल निवास जंगलों को मिटा रही हैं, अंधाधुंध दोहन कर रही हैं अर्थात उन्हें उनकी संपत्ति से बदर कर रही हैं और दूसरी ओर नारा लगा रही है कि देश के संसाधनों पर प्रथम हक इनका है। मध्यप्रदेश में दलितों को बेरोकटोक बिना शुल्क के बजरी खनन करने की छूट देने वाली अफवाहें जनमानस में एक धारणा बना रही है कि लोकतंत्र का मतलब वोट तंत्र होता है जहां वोट के लिए उठाया जाने वाला हर कदम जायज है। इस प्रकार नकल से निकली निरपेक्षता ने भारतीय समाज के ताने-बाने को मात्र 70 वर्ष में इतना विकृत कर दिया है जितना हजार वर्ष की गुलामी नहीं कर पाई? ऐसे में देश के भाग्य विधाताओं से इतना ही निवेदन है कि वे भारत की समस्याओं का हल भारतीयता में ढूंढ़ने का प्रयास करें, लेकिन ये गंभीर नहीं है और इनकी यह लापरवाही संपूर्ण तंत्र को अराजक बनाने की ओर ले जा रही है।

खरी-खरी

रंग में भंग डालता रंग

रंग प्रकृति की अद्भुद देन है। रंगों के माध्यम से प्रकृति अपने सुंदर स्वरूप को प्रकट करती है इसीलिए मनुष्य ने अपने भावों को प्रकट करने का माध्यम रंगों को बनाया। विभिन्न प्रकार के रंग विभिन्न प्रकार की मनोदशा को प्रकट करते रहे हैं। हमारे यहां तो केशरिया रंग को इतना पसंद किया गया कि शाका जैसी अद्वितीय बलिदानी परम्परा को भी केशरिया करना कहा गया। ऐसे ही हरे, नीले, पीले, सफेद आदि रंगों को विभिन्न मनोदशा को प्रकट करने का माध्यम बनाया गया या प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया। रंगों के संबंध में अनेक कहावतें एवं मुहावरे प्रचलित हुए। ऐसा ही एक मुहावरा है 'रंग जमना' और ठीक इसके विपरीत है 'रंग में भंग पड़ना'। आजकल जमे हुए रंग में रंग द्वारा भंग पड़ने के चर्चे चारों ओर हैं। ऊपर हमने जिन रंगों की चर्चा की है उनमें ही एक रंग है 'काला'। है तो अन्य रंगों जैसा ही रंग लेकिन बिचारे को प्रतीक बना दिया है असहमति का। जब भी किसी बात पर कोई असहमति जतानी होती थी तो काले रंग के कपड़े पहनने या काला रंग दिखाने की परम्परा रही है। महारानी कैकयी जब कोप भवन में गई तब काले ही कपड़े पहने बताते हैं। इस प्रकार असहमति जताने का प्रचलन हमारे यहां प्रारम्भ से ही रहा है। जो भी शासन अपने आपको अपनी जनता के प्रति उतरदायी मानता है वह उसकी सहमति असहमति का ध्यान अवश्य रखता है। इसीलिए तो वह जवाबदेह शासन बन पाता है। हमारे भारत में यह असहमति प्रकट करने की परम्परा प्रारम्भ से रही इसीलिए तो काले रंग को इसका प्रतीक माना गया। आजादी के बाद जो व्यवस्था पनपी उसमें तो असहमति को बहुत महत्व दिया जाने की बात की जाती है। प्रायः लोकतंत्र का अर्थ ही बताया जाता है कि वह शासन जो जनता के प्रति जवाबदेह हो और जहां जनता को अपनी असहमति प्रकट करने का अधिकार हो। इसी असहमति को प्रकट करने के लिए काले रंग का प्रयोग होता आया है। आजादी के बाद से ही नेताओं के समक्ष अपनी असहमति प्रकट करने के लिए काला कपड़ा दिखाने के अनगिनत उदाहरण मौजूद हैं। संजीदा नेताओं ने भी इस असहमति को सहज लिया और असहमति जताने वालों से बात कर उनकी समस्या को सुना लेकिन इस बार राजस्थान में इस काले रंग ने रंग में भंग डाल रखा है। राज्य की मुख्यमंत्री अपने शासन पर गर्व प्रकट करने के लिए गौरव यात्रा निकाल कर अपना रंग जमाना चाहती है और यह काला रंग स्थान-स्थान पर इस रंग में भंग डाल रहा है। पूरी प्रशासनिक मशीनरी इस बात को लेकर मुस्तैद है कि कोई भी व्यक्ति मुख्यमंत्री जी के सामने अपनी असहमति दिखाने के लिए काले रंग का उपयोग नहीं करे। ऐसा न करने के लिए प्रशासनिक अधिकारी मुख्यमंत्री जी के पहुंचने से पहले ही नोटिस चस्पा कर रहे हैं। मुख्यमंत्री जी की सभा में जाने वालों के काले कपड़े, काले जूते, काले बैग, काले रुमाल आदि सभा में जाने से पहले ही उतरवाए जा रहे हैं। लेकिन काला रंग भी आखिर काला है। जहां बिखरता है अपने से पहले के सभी रंगों को निस्तेज कर देता है और वही हाल आजकल इस काले रंग ने बना रखा है। मुख्यमंत्री जी का काले कपड़े पहनकर अपने अध्यक्ष को मिठाई खिलाते एक चित्र भी सोशल मीडिया में वायरल हुआ है तो फिर प्रश्न उठता है कि जनता के काले रंग पर इतना एतराज क्यों? फिर लोकतंत्र का तो अर्थ ही असहमति प्रकट करने का अधिकार होता है। यदि काले झंडे वाले किसी को हानि पहुंचाए बिना अपनी असहमति प्रतीकात्मक रूप से प्रकट करते हैं तो फिर सरकारी मशीनरी की इस विषय में इतनी मुस्तैदी क्यों? क्या सरकार असहमति जताने वालों से डरती है? यदि सरकार असहमति जताने वालों से डरती है या उसमें अपनी जनता के इस अधिकार के कारण किसी प्रकार का भय है तो यह स्थिति लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए तो ठीक नहीं है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.09.2018 तक	**रायसर (बीकानेर)**। बीकानेर से डूंगरगढ़ मार्ग पर स्थित।
2.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.09.2018 तक	**बरडाना (जैसलमेर)**। नाचना-रामदेवरा मार्ग पर स्थित।
3.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.09.2018 तक	**कांकराला (बाड़मेर)**। बालोतरा, समदड़ी व कल्याणपुर से बसें उपलब्ध।
4.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.09.2018 तक	**लूणावास कलां (जोधपुर)**। जोधपुर दलेखां चक्की से बसें।
5.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.10.2018 तक	**मानखंड** (फतहनगर) उदयपुर। **सम्पर्क सूत्र :** 9413813601
6.	प्रा.प्र.शि.	07.10.2018 से 10.10.2018 तक	**चौबारा**। दिल्ली जयपुर नेशनल हाइवे पर। शाहजहांपुर से 1 किमी दूर।
7.	प्रा.प्र.शि.	07.10.2018 से 10.10.2018 तक	**कालाथल** (बाड़मेर)। बालोतरा, गिड़ा, पाटोदी से बस है।
8.	प्रा.प्र.शि.	07.10.2018 से 10.10.2018 तक	**कड़वा** (ओसियां)।
9.	मा.प्र.शि.	14.10.2018 से 20.10.2018 तक	सुजानसिंह का फार्म हाउस, **जूना**। बाड़मेर से जूना पतरासर रोड़ पर।
10.	प्रा.प्र.शि.	14.10.2018 से 17.10.2018 तक	**उदट** (बीकानेर)। बीकानेर, कोलायत, नोखड़ा से बसें। **सम्पर्क सूत्र :** 9783134728
11.	प्रा.प्र.शि.	14.10.2018 से 20.10.2018 तक	राजपूत छात्रावास **किशनगढ़**। अजमेर-जयपुर मार्ग पर स्थित।
12.	प्रा.प्र.शि.	14.10.2018 से 20.10.2018 तक	करड़ेश्वर महादेव मंदिर **करड़ा** (जालोर)। भीनमाल व सांचौर से बस।
13.	प्रा.प्र.शि.	14.10.2018 से 20.10.2018 तक	शंखेश्वर महादेव मंदिर, **डोडियाली** (जालोर) हरजी व उम्मेदपुर से बस व टैक्सी।
14.	प्रा.प्र.शि.	14.10.2018 से 20.10.2018 तक	लोहागर मंदिर **सुमेर** (पाली)। देसूरी, जोजावर से साधन। **सम्पर्क सूत्र :** 8094010093
15.	मा.प्र.शि.	15.10.2018 से 21.10.2018 तक	श्रीलाल उमावि **अमृतनगर,** बालेसर सता (शेरगढ़), जिला जोधपुर।
16.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	17.10.2018 से 20.10.2018 तक	**रामदेवरा** (जैसलमेर)। पोकरण, फलोदी व व जैसलमेर से बस व रेल सुविधा।
17.	प्रा.प्र.शि.	19.10.2018 से 22.10.2018 तक	**खारा** (बीकानेर)। बीकानेर लूणकरणसर मार्ग पर। **सम्पर्क सूत्र :** 9829241915
18.	प्रा.प्र.शि.	19.10.2018 से 22.10.2018 तक	**काणेटी**। तहसील साणंद (गुजरात)।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ चार का शेष) रंग में भंग....

यदि भय नहीं है और सरकार यह सोचती है कि कोई उसके सामने असहमति कैसे प्रकट कर सकता है तो भी यह लोकतंत्र के लिए अति घातक है क्यों कि इस प्रकार का अहंकार तो लोकतंत्र की जड़ों में मट्ठा डालना है। इसलिए विचारणीय विषय है कि ऐसे कौन से कारण हैं जिनके कारण सरकार में असहमति प्रकट करने वालों से भय उत्पन्न हो गया अथवा सरकार को असहमति प्रकट करने से ही एतराज है। कारण जो भी है उनका निवारण होना आवश्यक है क्योंकि असहमति सदैव बनी रहती है, उसे प्रकट भी किया जाना चाहिए और सरकार द्वारा उस पर संज्ञान भी लिया जाना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होगा तो फिर लोकतंत्र को बचाना मुश्किल है क्योंकि असहमति का आदर ही लोकतंत्र की खुशबु है इसीलिए किसी भी रंग को रंग में भंग डालने वाला न समझा जाए तो ही अच्छा है।

प्रतिभाएं

विजयलक्ष्मी कंवर व हिमानी कंवर : संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक अर्जुनसिंह मालपुरा की पोती एवं महेन्द्रसिंह मालपुरा की पुत्री विजयलक्ष्मी कंवर ने आरबीएसई की कक्षा 10वीं में 80.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। विजयलक्ष्मी की बड़ी बहिन हिमानी कंवर ने आरबीएसई की कक्षा 12वीं में 84.00 अंक किए हैं। दोनों छात्राएं संघ की स्वयंसेविका हैं। तीन पीढ़ियां संघ में सक्रिय हैं।

यशवर्द्धनसिंह : मूल रूप से महरोली निवासी यशवर्द्धनसिंह पुत्र लक्ष्मणसिंह के पुत्र यशवर्धनसिंह ने सीकर में अध्ययन करते हुए आरबीएसई की इस वर्ष की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 91 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सूर्यप्रतापसिंह : कुड़ली निवासी ओमसिंह के पुत्र सूर्यप्रतापसिंह ने राज्य स्तरीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में एयर पिस्टल 10 मीटर में भाग लिया। 11वीं का यह छात्र राष्ट्रीय प्रतियोगिता की तैयारी कर रहा है एवं परिवार के साथ जयपुर में रहता है।

दढ़ियाणा व लक्ष्मीपुरा में स्नेहमिलन

संघ के गुजरात क्षेत्र के महेसाणा प्रांत के दढ़ियाणा गांव में 21 सितम्बर को स्नेहमिलन आयोजित हुआ जिसमें समौ, मिलवड़, आंकबा, कालरी, कमाना, जेतलवासना, जगन्नाथपुरा आदि गांवों से समाज के महिला पुरुषों ने भाग लिया। स्नेहमिलन में वक्ताओं द्वारा संघ की कार्यप्रणाली समझाई गई एवं समाज विषयक चर्चाएं हुई।

बनासकांठा प्रांत के लक्ष्मीपुरा (धोता) में भी 2 सितम्बर को स्नेहमिलन रखा गया जिसमें कुणघेर, मोटीचंदूर, सतलाणा, धोडीयाल, लक्ष्मीपुरा, सेमदपुरा, मजादर, मोटासडा, रणछोड़पुरा, डालवाड़ा आदि गांवों के समाजबंधु उपस्थित रहे। स्नेहमिलन में अजीतसिंह कुणधेर, रामसिंह लक्ष्मीपुरा, धर्मेन्द्रसिंह मोटी चंदूर आदि ने संघ विषयक जानकारी उपलब्ध करवाई।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

(पृष्ठ तीन से लगातार)

'एक से चार सितम्बर के बीच चौदह शिविर'

मारवाड़ जंक्शन

झलोड़ा

व्यवस्था का जिम्मा समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर संभाला। सिवाना प्रांत के पादरू मंडल के धारणा गांव में भी इसी अवधि में शिविर का आयोजन हुआ, जिसका संचालन वीरमसिंह थोब ने किया। शिविर में धारणा, पादरू, इंद्राणा, थापन, कुंडल आदि गांवों सहित क्षेत्र के 136 राजपूत बालकों ने प्रशिक्षण लिया। मेहरसिंह, मंगलसिंह, हीरसिंह, लाखसिंह, विक्रमसिंह सहित समस्त धारणा ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी भी विदाई कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

1 से 4 सितम्बर की अवधि में ही शेखावाटी प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर झुंझनूं जिले में खेतड़ी स्थित राजपूत धर्मशाला में आयोजित हुआ। केन्द्रीय कार्यकारी रेवंतसिंह पाटोदा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों को संघ की प्रारम्भिक जानकारी प्रदान की तथा उन्हें संस्कारों का महत्व समझाया। शिविर में खेतड़ी, त्योदा, डाडा फतेहपुरा, अशोक नगर, अन्नपूर्णा नगर आदि से लगभग 80 शिविरार्थी सम्मिलित हुए। सुरेन्द्रसिंह त्योदा व भवानीसिंह फतेहपुरा ने आयोजन में सहयोग किया। प्रान्त प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर भी शिविर में उपस्थित रहे। इसी अवधि में एक शिविर जयपुर संभाग के दौसा प्रांत के गांव बाढ़ मोचिंगपुरा में आयोजित हुआ। शिविर संचालक मदनसिंह बामणिया ने शिविरार्थियों को बताया कि संघ व्यष्टि से समष्टि तथा समष्टि से परमेष्टि तक पहुंचने का मार्ग है। अपने स्वधर्म का पालन करते हुए जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग है। शिविर में झापड़ावास, लिखली, दौसा, उदयपुरा, गढ़, मलारना, बाढ़ मोचिंगपुरा, खेतड़ी, कारोली, भोजपुरा, जिराडी तथा गुगलकोटा के 80 से अधिक युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। दातारसिंह, गंगासिंह, श्यामवीर सिंह, अजयसिंह, करणसिंह, जितेन्द्रसिंह, गजेन्द्रसिंह, संग्रामसिंह, नरेन्द्रसिंह आदि ग्रामवासियों ने शिविर की व्यवस्था संभाली।

रेड़ी

पूरण

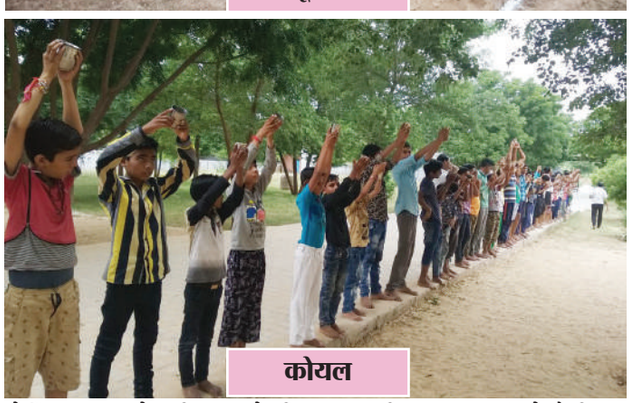
कोयल

इसी प्रकार चुरू प्रांत के रेड़ी गांव में शिविर आयोजित हुआ, जिसका संचालन प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह आलसर ने किया। शिविर में राजपूत छात्रावास चुरू तथा राजपूत छात्रावास सरदारशहर और मीतासर, भाडंग, बीलिया आदि गांवों से 70 से अधिक युवा सम्मिलित हुए। रेड़ी गांव के ज्ञानसिंह, भंवरसिंह, विक्रमसिंह, बजरंगसिंह आदि ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। नागौर संभाग में भी इस अवधि में दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए। लाडनूं-सुजानगढ़ प्रांत के डीडवाना मंडल के गांव ठाकरियावास में आयोजित शिविर का संचालन नत्थूसिंह छापड़ा ने किया। उन्होंने स्वागत कार्यक्रम में शिविरार्थियों से कहा कि शारीरिक व मानसिक रूप से शिविर में उपस्थित रहेंगे तो पूज्य तनसिंह जी की पीड़ा को अपने हृदय में अनुभव कर सकेंगे। शिविर में ठाकरियावास, पाटण, बिठूड़ा, सिंघाना, चक, खारड़िया, सावंराद, घिरडोदा आदि गांवों के राजपूत बालक सम्मिलित हुए। ठाकरियावास गांव के शिवदानसिंह, राजेन्द्रसिंह, जुगलसिंह, ओमसिंह ने व्यवस्था संभाली। इसी प्रकार लाडनूं मंडल के कोयल गांव में संपन्न शिविर का संचालन उगमसिंह गोकुल ने किया। कोयल गांव के माध्यमिक विद्यालय में आयोजित शिविर में ढिंगसरी, तिपनी, धूड़ीला, ओड़िन्ट, कोयल, दुगोली, रताऊ, हिरावती आदि गांवों के लगभग 85 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। प्रतापसिंह व दौलतसिंह कोयल ने शिविर की व्यवस्था संभाली। शिविर की समाप्ति के पश्चात् लाडनूं प्रधान श्रीमती पुष्पा कंवर के श्वसुर प्रतापसिंह कोयल के आवास पर स्नेहमिलन रखा गया जिसमें गणमान्य समाजबंधु सम्मिलित हुए। वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाना तथा संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा ने संघ की कार्य पद्धति की जानकारी प्रदान की तथा वर्तमान समय में संघ कार्य की आवश्यकता को समझाया।

8 से 10 सितम्बर तक गुजरात के बनासकांठा प्रांत के जाड़ी गांव में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसमें रामसर, कुणघेर, वातम, जाड़ी, थराद, रतनपुर, सुरावा, वलादर, तेजावास, सातसण, भीलाचल, चारड़ा, रडोसण, देवदा, जड़िया, माडका, चिभड़ा, फोरणा, मेसरा, सिया, भारीप आदि गांवों के समाज बंधुओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन अजीतसिंह कुणघेर ने सूरतसिंह वातम, भगवानसिंह वलादर, शैतानसिंह चारड़ा, श्रवणसिंह वलादर, परबतसिंह वलादर आदि के सहयोग से किया। शिविर में 9 सितम्बर को स्थानीय सहयोगियों का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक पदमसिंह रामसर ने संघ का परिचय दिया। बनासकांठा में चल रहे कार्यक्रमों की जानकारी भी दी गई। व्यवस्था का दायित्व जोगराजसिंह जाड़ी, हीरसिंह जाड़ी, महिपालसिंह जाड़ी, शैतानसिंह चारड़ा आदि ने संभाला।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाई

जैसलमेर संभाग के चांदन प्रांत की चांदन शाखा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया जिसमें उपस्थित समाज बंधुओं ने भगवान श्रीकृष्ण के चित्र पर पुष्प अर्पित किए। प्रांत प्रमुख तारेन्द्रसिंह ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे लिए गौरव की बात है कि हम भगवान श्रीकृष्ण की संतान हैं। हमे उनके द्वारा प्रदत्त गीतोक्त मार्ग पर आरुढ़ करने का काम श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है, हमें इस सौभाग्य का लाभ लेना चाहिए। दानसिंह, राजेन्द्रसिंह आदि ने भी अपने विचार रखे। दुदाजी व त्रिलोकसी की जयंती मनाने को लेकर भी विचार विमर्श किया गया। चांदन के अलावा करमा की ढाणी, मूलाना, देवीकोट, झिंझनियाली, फुलिया तनाश्रम आदि शाखाओं में भी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाई गई।

(पृष्ठ एक का शेष)

क्षत्रियों की..

भालों से डरने वाले, विरोधों से डरने वाले रजपूती का काम नहीं कर सकते। जल्दबाजी न करें, सोच समझ कर कदम उठाएं लेकिन कदम उठाएं अवश्य। यदि काम करने का श्रेय लेंगे तो असफल होंगे इसलिए राम के सन्मुख होकर श्रेय का समर्पण कर काम शुरू करें। जब भी निराश हों, गीता का सहारा लें। पूरी गीता निराशा को दूर करने का संदेश है। दूसरे अध्याय के दूसरे श्लोक से भगवान निराशा को दूर करना प्रारम्भ करते हैं जो अंत तक चलता है। अपने आप पर विजयी होने के लिए तैयार रहें, संसार को सुन्दर बनाना है तो स्वयं को सुंदर बनाने से प्रारम्भ करें, श्री क्षत्रिय युवक संघ का यही मार्ग है।

2 सितम्बर रविवार को प्रातः 10 बजे से शुरू हुए समारोह में प्रारम्भ में यज्ञ हुआ। वीर मेरामण जी जाडेजा की मूर्ति का अनावरण हुआ। मुख्य समारोह में डॉ. जयेन्द्रसिंह जड़ेजा ने एक्ट्रोसिटी एक्ट सहित समाज पर हो रहे अन्य आक्रमणों पर रोष व्यक्त किया। आरक्षण को आर्थिक आधार पर करने की मांग की एवं सबको एकता व सहकार की शपथ दिलवाई। जामनगर विधायक धर्मेन्द्रसिंह व गोधरा विधायक सी.के. राउल ने भी अपनी बात कही। उत्तरप्रदेश के बलिया से विधायक सुरेन्द्रसिंह ने एक्ट्रोसिटी एक्ट के दुष्प्रभावों को प्रकट किया। संघ प्रमुख श्री के हाथों दशरथबा को राजपूतानी रत्न एवार्ड व दशरथसिंह एवं भरतसिंह को शौर्य एवार्ड दिया गया। माननीय संघ प्रमुख श्री 1 सितम्बर को दोपहर अहमदाबाद पहुंचे। रात्रि विश्राम राजकोट में किया। 2 सितम्बर को प्रातः धर्म जागरण विभाग के गुजरात प्रभारी सत्यम जी राव के साथ बैठक की। कार्यक्रम में शामिल हुए एवं रात्रि विश्राम सुरेन्द्रनगर स्थित संघ कार्यालय शक्तिधाम में किया। इससे पहले जामनगर गेस्ट हाउस में समारोह में आए स्वयंसेवकों से मिले। 3 सितम्बर को साणंद में दिग्विजय सिंह पलवाड़ा के नवनिर्मित आवास पर आसपास के स्वयंसेवकों एवं सामाजिक सहयोगियों के साथ भोजन किया। 3 सितम्बर की शाम को जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

सौराष्ट्र...

जाम सताजी का पुत्र अजा निकट ही विवाह करने गया था, युद्ध के समाचार सुन विवाह की रस्म को बीच में छोड़ अपने साथियों सहित युद्ध में शामिल हुआ एवं अजीज कोकाह के हाथी के सिर पर अश्व चढ़ाकर घातक वार करते समय उसके संरक्षकों के हमले में शहीद हुआ। उनकी पत्नी सूरजकंवर बा सती हुई। ऐसे ही एक वीर मेरामणजी हाला हुए जिन्होंने एक दूसरे युद्ध में अद्भुद वीरता का परिचय दिया, उन्हीं की मूर्ति का समारोह के दिन अनावरण किया। इस स्थल पर हजारों क्षत्रियों का बलिदान हुआ। उसी बलिदान की याद में प्रतिवर्ष ऐसा समारोह रखा जाता है।

बनना है...

राठौड़ों की गोगादेव शाखा के आदि पुरुष गोगादेव जी के मंदिर के शताब्दी समारोह पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने जोधपुर जिले के सेखाला में यह बात कही। उन्होंने कहा कि हर प्राणी का हृदय ईश्वर का मंदिर है लेकिन जिसका अंतर निर्मल होता है उसे इस बात का अनुभव होता है। अंतर की निर्मलता सद्कर्मों से आती है और सबसे बड़ा सद्कर्म स्वधर्म पालन है जो ईश्वर द्वारा सौंपा गया कार्य है। मानव के रूप में इस जन्म में हमारा स्वधर्म क्षात्रधर्म है। हमारे पूर्वज क्षात्रधर्म का पालन करते-करते ईश्वर को पा गए। गोगादेवजी इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। उन्होंने युद्ध करते-करते, बदला लेते-लेते युद्ध के मैदान में सद्गुरु को पाया एवं उनकी कृपा से परमेश्वर के पथ पर अग्रसर हुए। इनसे पहले मल्लीनाथ जी जैसे योद्धा क्षात्रधर्म का पालन करते-करते अपने जीवन में आए मोड़ से ईश्वर की ओर उन्मुख हुए। अर्जुन को गीता जैसा गूढ ज्ञान भगवान श्रीकृष्ण ने युद्ध के मैदान में दिया। जीवन को कैसे जीया जाए इसका मार्ग प्रशस्त करती है गीता। रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में अध्यात्म को ढूंढना पड़ता है लेकिन गीता में अध्यात्म के सिवाय कुछ भी नहीं है। अध्यात्म का अर्थ होता है आत्मा के अधीन हो जाना। गीता आत्मा के अधीन होने की प्रक्रिया का क्रमबद्ध वर्णन है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को आदेश दिया कि भगवान ने तुम्हें क्षत्रिय के घर भेजा है इसलिए युद्ध कर और मेरा स्मरण कर। यही आदेश हम सभी के लिए भी है। धर्म के मार्ग पर चलने वाले को कभी किसी प्रकार का भय नहीं होना चाहिए, भगवान सदैव उसके साथ होते हैं वहीं अधर्म के मार्ग पर चलने वाला सदैव भयभीत रहता है, दुःख पाता है। दुर्योधन का उदाहरण हमारे सामने है। क्षत्रिय का दायित्व है कि वह संसार को धर्म के मार्ग पर चलाए लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि वह स्वयं धर्म के मार्ग पर चले। क्षात्रधर्म का पालन वह कर सकेगा जो जाग जाएगा और गीता के अनुसार जागता वह है जो संयमी होता है। हमारे पूर्वजों का जीवन संयमित था इसलिए वे संसार को दिशा दे पाए। राजपूत एक जिंदा कौम है लेकिन बीमार है। लेकिन हम इसकी बीमारी पर झींके नहीं बल्कि इसकी सेवा करें और सेवा वह होती है जिसके बदले में कोई मांग नहीं होती। हम समाज को उठाने की नहीं इसको मातृ स्वरूपा मानकर इसकी सेवा करने की बात करें, उस ओर उद्यत होवें। मेरे किसी काम से इस मां के दामन पर कोई लांछन नहीं लगे यह जागृति सदैव बनी रहे। कोई आवश्यक नहीं कि हम जो चाहते हैं वह कर ही लेंगे लेकिन उधर मुड़ें तो सही क्यों कि पूज्य तनसिंह जी ने कहा है, 'निज को न बनाया तो जग रच नहीं बनता।' संघ प्रमुख श्री ने कहा कि सिकंदर तक हमें कोई हरा नहीं सका। विश्व विजय का सपना लेकर चलने वाले सिकंदर को भारत से वापिस लौटना पड़ा क्योंकि हम बलवान थे। कालांतर में हम गुलाम हुए क्योंकि जागृति के अभाव में कमजोर होते गए। ऐसी जागृति की आवश्यकता है कि मेरे किसी व्यवहार से पड़ौसी पर तो दुष्प्रभाव नहीं पड़ रहा। ऐसी जागृति ही हमें परमेश्वर के निकट ले जाएगी। संघ इसी जागृति के लिए प्रयासरत है। संघ दूसरों के लिए जीने वाले क्षत्रिय तैयार कर रहा है और संघ किसी परिणाम की जल्दीबाजी में नहीं है, उसके पास शताब्दियों का धैर्य है। संघ मानता है कि उसके कदम सही दिशा में है और यह विश्वास है कि कोई कार्य निष्फल नहीं जाता।

इस शताब्दी समारोह में गोगादेव राठौड़ों के सभी गांवों के समाज बंधुओं के साथ-साथ अन्य समाजबंधु भी उपस्थित हुए। विशिष्ट अतिथि नारायणसिंह माणकलाव ने संघ को संस्कारों की पाठशाला बताया एवं स्वयं द्वारा संचालित राजपूत शिक्षा कोष की जानकारी दी। समारोह में मंदिर परिसर में बने साधना कक्ष एवं पुस्तकालय का माननीय संघ प्रमुख श्री के हाथों उद्घाटन करवाया गया। गोगादेव राठौड़ों की विभिन्न प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। ऐसा माना जाता है कि 100 वर्ष पूर्व दशम नाथ के नाम से विख्यात गोगादेवजी ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर अपने एक वंशज को यहां मंदिर बनाने की प्रेरणा दी थी। उसी मंदिर का शताब्दी समारोह मनाया गया जिसमें तीन दिन तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

(पृष्ठ दो का शेष)

सूरमा सामन्त...

'होते हिन्द हतास, नमतो जे राणा न्रपत।
सबल फत्ता साबास, आरज लज राखी अजां।।'

राव गोपालसिंह खरवा श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे। जीवन के अन्तिम वर्षों में वीतराग साधु की तरह पुष्कर अथवा खरवा में एकान्त स्थान पर भगवत स्मरण करते रहे। जीवन की अन्तिम वेला में वे असाध्य रोग से पीड़ित हो गए। 66 वर्ष की उम्र में दो महीने उन्होंने कुछ नहीं खाया परन्तु उनके तेज एवं साहस में कोई कमी नहीं आई। ध्यान व भगवत स्मरण यथावत बना रहा। उन्हें जैसे मृत्यु का आभास था। गीता का पाठ सुनते हुए मृत्यु से पांच मिनट पूर्व धरती पर आसन लगाकर बैठ गए। गंगाजल एवं तुलसी पान किया, वृन्दावन से आई रज को मस्तक पर लगाया हरि ॐ तत्सत बोलते सब को प्रणाम कर ब्रह्मलीन हो गए। जवानी में आक्रमक क्रांतिकारी जीवन की सांझ पर मृत्युंजय बन योगीराजों की भांति स्वर्गस्थ हो गए। वे क्षत्रिय स्वामीमान, साहस और सद्गुणों की प्रतिमूर्ति थे। धन्य है कौम जिसके आंचल में ऐसे शूरमा खेल खेल गए। राव गोपालसिंह खरवा को कौम के श्रद्धासुमन अर्पित। राव गोपालसिंह खरवा की मूर्ति अजमेर- ब्यावर हाइवे पर खरवा गांव के चौराहे पर स्थित है। जिसका उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वीर बहादुरसिंह ने उद्घाटन किया था। श्रद्धावान लोग उन्हें यहां नमन कर आगे बढ़ते हैं। उनसे आशीर्वाद लेते हैं।

जीवनोपयोगी जानकारी...

सर्टिफिकेट कोर्सेज :

(i) सर्टिफिकेट इन एक्स-रे टेक्निशियन।
(ii) सर्टिफिकेट इन लैब असिस्टेंट टेक्निशियन।
(iii) सर्टिफिकेट इन डेन्टल असिस्टेंट।
(iv) सर्टिफिकेट इन ऑपरेशन थियेटर असिस्टेंट।
(v) सर्टिफिकेट इन नर्सिंग केयर असिस्टेंट।
(vi) सर्टिफिकेट इन ई.सी.जी. एण्ड सी.टी. स्कैन टैक्निसियन।
(vii) सर्टिफिकेट इन डायलिसिस टेक्निशियन।
(viii) सर्टिफिकेट इन होम बेस्ट हेल्थ केयर।
(ix) सर्टिफिकेट इन रूरल हेल्थ केयर।
(x) सर्टिफिकेट इन HIV एण्ड फैमिलि एजुकेशन।
(xi) सर्टिफिकेट इन न्युट्रिशन एण्ड चाइल्ड केयर।

उपरोक्त सभी सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्सेज की अवधि 6 महीने से लेकर दो वर्ष तक है तथा इनमें प्रवेश हेतु न्यूनतम योग्यता दसवीं है। **(क्रमशः)**

रामसिंह कोडका का देहावसान

रामसिंह कोडका

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **रामसिंह कोडका** का विगत 9 सितम्बर को देहावसान हो गया। जोधपुर विश्वविद्यालय में स्पोर्टस डायरेक्टर के पद से सेवानिवृत कोडका सेवानिवृति के पश्चात अपने गांव में निवासरत थे। 3 दिसम्बर 1948 को जन्में रामसिंह जी ने संघ के 2 उ.प्र.शि., 5 मा.प्र.शि., 1 विशेष शिविर एवं 1 प्रा.प्र.शि. किया। 1963 में आमेट में हुआ मा.प्र.शि. इनका पहला शिविर था एवं 1966 में देवंदी उ.प्र.शि. से संघ के निकट सम्पर्क में आए। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

हरिसिंह ढेलाणा को पितृशोक

सोहनसिंह देवराज

शेरगढ़ क्षेत्र में संघ के सक्रिय स्वयंसेवक हरिसिंह ढेलाणा के पिता **सोहनसिंह देवराज** का देहावसान 4 सितम्बर को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

वीर जेताजी की जयंती मनाई

पाली जिले के बगड़ी नगर में प्रतिवर्ष की भांति 12 सितम्बर को गिरि सुमेल युद्ध के नायक जेताजी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। समारोह में प्रतिभाओं एवं सहयोगियों का बहुमान किया गया। समाज की चार विधवा महिलाओं को राव जेताजी विकास संस्थान की तरफ से सिलाई मशीन भेंट की गई। समाज के सहयोगियों ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बेटियों के विवाह के लिए सहयोग राशि की घोषणा की। इस अवसर पर जेताजी स्मारक से युवाओं द्वारा वाहन रैली भी निकाली गई। जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह को दूधेश्वर

महादेव मठ गाजियाबाद के महंत नारायणगिरि जी, पाली सहकारी बैंक के अध्यक्ष पुष्पेन्द्रसिंह कुड़की, राजेन्द्रसिंह बगड़ी, दिग्विजयसिंह सरदारसमंद आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने जेताजी कूंपाजी के बलिदान को याद रखते हुए वर्तमान परिदृश्य में संगठित रहकर चलने की आवश्यकता पर बल दिया।

आउवा में पेनोरमा का उद्घाटन

अपनी गौरव यात्रा के दौरान राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने पाली जिले के आउवा कस्बे में सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के नायक वीर कुशाल सिंह चांपावत एवं अन्य 24 स्वतंत्रता सेनानियों की याद में निर्मित पैनोरमा का उद्घाटन किया। राजस्थान सरकार ने इतिहास एवं संस्कृति के संरक्षणार्थ पूरे राज्य में ऐसे 48 पेनोरमा बनावाए हैं। इस पेनोरमा में ठाकुर कुशालसिंह एवं उनके क्रांतिकारी साथियों की मूर्तियां लगाई गई हैं एवं सुगाली माता की खंडित मूर्ति को बदल कर वैसी ही नई मूर्ति लगाई है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान का इतिहास स्वर्णिम रहा है इसे संरक्षित कर भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में उपयोग लिया जाने के लिए इस प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं। इस अवसर पर भाजपा से जुड़े अनेक नेता व गणमान्य समाजबंधु उपस्थित थे।

राजपूत सभा भवन का लोकार्पण

जोधपुर के लूणी क्षेत्र के सरभाकर में नवनिर्मित राजपूत सभा भवन का 11 सितम्बर को लोकार्पण पूर्व महाराजा गजसिंह के मुख्य आतिथ्य में किया गया। पूर्व नरेश ने इस अवसर युगानुकूल तकनीकी शिक्षा हासिल करने एवं संगठित होकर सभी का विकास कर देश को नई दिशा देने का आह्वान किया। दुदेश्वर महादेव मठ गाजियाबाद के महंत नारायणगिरि जी ने संस्कृति का सम्मान करते हुए विकास करने की बात कही। राजपूत विकास परिषद के तत्वावधान में हुए इस कार्यक्रम को महंत प्रतापपुरी, महंत रामकृष्ण सेवानंद, महंत जगदीश गिरि, पूर्व प्रधान मानसिंह पाल, नारायणसिंह सरेचा, वीरेन्द्र प्रतापसिंह पाल आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने नशे से बचने एवं समाज हित में क्रियाशील होने का आह्वान किया। पप्पूसिंह ने स्वागत उद्बोधन दिया वहीं मदनसिंह सोलंकियातला ने संचालन किया।

राणी रुपादे मंदिर में धर्म सम्मेलन

बालोतरा के निकट स्थित राणी रूपादे पाळिया के राणी रुपादे मंदिर परिसर में 11 सितम्बर को चतुर्थ वर्ष धर्मसभा एवं संत सम्मेलन का आयोजन किया गया। संत सम्मेलन में राम जन्म भूमि न्यास अयोध्या के अध्यक्ष नृत्य गोपालदास, डूंगरपुरी मठ चौहटन के महंत जगदीशपुरी, महंत नारायण भारती, समदड़ी महंत मृत्युंजयपुरी, महंत सेवानाथ भरड़कोट आदि ने रावल मल्लीनाथ एवं राणी रुपादे के त्याग एवं तपोमय जीवन से प्रेरणा लेकर धर्म के मार्ग का अनुसरण कर मनुष्य जीवन की सार्थकता सिद्ध करने का आह्वान किया। राणी भटियाणी मंदिर संस्थान जसोल के अध्यक्ष किशनसिंह जसोल ने नशे की प्रवृत्ति को समाज के लिए घातक बताया। उन्होंने शास्त्रों एवं महापुरुषों के आदेश का पालन करने का आह्वान किया। बाड़मेर के रावत त्रिभुवनसिंह ने कहा कि हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि हम उसी कुल में पैदा हुए जिसमें रावल मल्लीनाथ एवं राणी रुपादे जैसे संत पैदा हुए। संत सम्मेलन में पाली, जालोर, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर आदि जिलों के हजारों श्रद्धालुओं एवं गणमान्य लोगों ने भाग लिया। सम्मेलन में प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन चंदनसिंह चांदेसरा ने किया।

कमलसिंह बेमला को शिक्षक रत्न एवं भारत विद्या रत्न पुरस्कार

नई दिल्ली में 5 सितम्बर को इंडो नेपाल अंतर्राष्ट्रीय समरसता मंच द्वारा संघ के स्वयंसेवक डॉ. कमलसिंह बेमला को 'शिक्षक रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही इंडियन सोलिडेरिटी कौंसिल नई दिल्ली द्वारा 'भारत विद्या रत्न' पुरस्कार से भी नवाजा गया। समारोह के मुख्य अतिथि नेपाल के उप राष्ट्रपति परमानंद ओझा थे।

रतनसिंह बडोड़ागांव सम्मानित

राजधानी जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में इतिहास के व्याख्याता रतनसिंह बडोड़ागांव को राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान पुरस्कार से नवाजा गया। रतनसिंह संघ के स्वयंसेवक हैं एवं इतिहास में विशेष रुचि रखते हैं।

वृक्षारोपण किया

प्रताप युवा शक्ति की भीलवाड़ा शाखा ने स्वामी विवेकानंद के शिकागो उद्बोधन की 125वीं वर्षगांठ पर सवाईपुर में स्कूल, पंचायत भवन, स्वास्थ्य केन्द्र, विभिन्न मंदिर प्रांगण आदि में 300 पौधे लगाए। युवा शक्ति के प्रदेश उपाध्यक्ष कानसिंह खारड़ा के अनुसार इस अवसर पर पूर्व विधायक प्रदीपसिंह, विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी के राजस्थान प्रदेश संयोजक भगवानसिंह, भगवतसिंह खारड़ा, बद्रीलाल जाट, अमरचंद आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

संघशक्ति पहुंच लिया आशीर्वाद

एशियन गेम्स में घुड़सवारी में सिल्वर मेडल जीत चुके जितेन्द्रसिंह ने 14 सितम्बर को संघशक्ति कार्यालय पहुंच कर माननीय संघ प्रमुख श्री से आशीर्वाद लिया एवं प्रतियोगिता के अनुभव साझा किए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org